अवध ज्योति

अवधी त्रैमासिकी

अप्रैल – जून 2024

पंजी. सं. - 457/2010-11
निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल
स्थापित वर्ष : 1990
अवध भारती संस्थान

अवध-ज्योति

वर्ष : 30

अप्रैल-जून - 2024

संरक्षक :
डॉ. सत्या सिंह
सम्पादक:
डॉ. रामबहादुर मिश्र
अतिथि सम्पादक:
प्रो. पुनीत बिसारिया
उप सम्पादक :
रमाकांत तिवारी 'रामिल'
सह सम्पादक :
पंकज कंवल
सम्पादक सहयोग:
विष्णु कुमार शर्मा 'कुमार'
प्रबन्ध सम्पादक :
प्रदीप सारंग

पीयर रिव्यू पैनल:
प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित, लखनऊ
रामदेव धुरंधर, मारिशस
श्री विक्रममणि त्रिपाठी, नेपाल
डॉ.राकेश पाण्डेय, दिल्ली
सुधेन्दु ओझा, दिल्ली

अवध भारती संस्थान
नरौली, हैदरगढ़, बाराबंकी-225124
'अवधी भवन' अवध भारती संस्थान
अर्जुनगंज, लखनऊ-226002
वेब - www.awadhawadhi.com
e-mail: awadhjyoti@gmail.com
salmanansari7@gmail.com
Mob. : 9450063632

मुद्रक : दीप प्रकाशन
बी.एच.ई.एल. रोड नं. 1
यूपीएसआईडीसी, जगदीशपुर
अमेठी मो. 9565723540

विषय क्रम

रामजोहारि - रामबहादुर मिसिर 4
सम्पादकीय - डॉ. पुनीत बिसारिया 5-9
प्रतिनिधि बुंदेली कवि : जन्म एवं वर्ष 10-12
प्रतिनिधि बुंदेली कथाकार 13
प्रतिनिधि बुंदेली कवि एवं उनकी रचनाएं 14-117
बुन्देली कहानियां - 118-213

हाल चाल - 1. विनय दास को मित्र स्मृति अवधी सम्मान
2. डॉ. सत्या सिंह की पुस्तकों का लोकार्पण
3. अवध कोकिला प्रो. कमला श्रीवास्तव की श्रद्धांजलि सभा।
4. नहीं रहे राज बिसारिया
5. भारतीय भाषा महोत्सव भोपाल 214-216

चिट्ठी पत्री - डॉ. अशोक अज्ञानी, वीरेन्द्र तिवारी बेतुक, सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर', अंजनी कुमार सिंह, अरुण कुमार तिवारी, अजय प्रधान, डॉ. शिवेन्द्र कुमार मौर्य। 217-220

चीन्ह-पहिचान - कृतियों का परिचय 221-228
1. अवध-ज्योति (बैजनाथ विशेषांक)
2. तिरवेनी अवधी की वृहत्त्रयी
3. अवधी गीता
4. श्री राम चरित मानस शब्द अनुक्रमणिका
5. मानक भोजपुरी व्याकरण
6. साहित्य त्रिवेणी (मासिकी)
7. अवधने का बाउर
8. बघेली साहित्य-उद्भव विकास
9. अक्षरा मासिकी (भारतीय भाषा विशेषांक)
10. जोगी बीर

खाताधारक : अवध भारती संस्थान
बैंक : पंजाब नेशनल बैंक, हैदरगढ़, बाराबंकी
खाता संख्या : 6844000100008997
आईएफसी कोड : PUNB0684400

एक प्रति मूल्य : 50/-, वार्षिक - 200/-
आजीवन सदस्यता : 1. विशेष सम्मानित : 5000/-
2. संरक्षक सदस्यता : 11000/-

सम्पादकीय

राम जोहारि

इत जमुना उत नर्मदा इत चम्बल उत टोंस।
छत्रसाल सों लरन की रही न काहू हौंस।।

बुंदेला, बुंदेलखंड, बुंदेली औ छत्रसाल कइ महातम ई दोहा से जाना जाय सकत है। अपनी बोली-बानी कइ परचार-परसार बदे अवध भारती संस्थान पछिले 30 सालन से अवधी तिमाही 'अवध-ज्योति' के जरिया लोकभाषा अवधी कइ लोक साहित्य अउ साहित्य पाठक लोगन तक पहुंचावत है। पत्रिका के तमाम विशेषांक छापे गयें। यही कड़ी मा हिन्दी की खास-खास विभाषा (बोली-बानी) पइ विशेषांक निकारै कइ योजना बनी छत्तीसगढ़ी, बघेली विशेषांक के बाद अब 'बुंदेली विशेषांक'। यहिके जिम्मेवारी अपने काँधे पुनीत बिसारिया भैया (अतिथि सम्पादक बुंदेली विशेषांक) उठाइन। उइ अवधी जंवार के रहवइया आयं मुला बुंदेली भाषा-साहित्य ओ संस्कृति के संबरधन मा जिउ जान से जुटे अहैं। हम जब अपने मन कइ बात उनसे बतावा तउ उइ हंसी - खुसी हामी भरि दिहिन। ई अंक बदे असीसत भये यहे कहब जुग जुग जियौ भैया। बुन्देली कइ भाषी-भाषी इलाका बहुते लम्बा-चौड़ा हवै - उत्तर परदेस कइ झांसी, जालौन, ललितपुर, महोबा, बांदा, हमीरपुर, म.प्र. के जबलपुर, होशंगाबाद, विदिशा, टीकमगढ़, औरछा, नरसिंहपुर, सिवनी, दतिया आदि जिलन मा बुंदेली बोली जात हवै।

असि अउ मसि दुइनो कइ महातम बुंदेली (बुंदेलखंड) मा व्यापा अहै। रानी लक्ष्मीबाई, छत्रसाल, ईसुरी, आचार्य केशवदास, पद्माकर, गंग कवि, राय प्रवीन, बोधा, राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त, सियाराम शरण गुप्त, माधव राव सप्रे, वृन्दावनलाल वर्मा, डॉ. रामकुमार वर्मा, केदारनाथ अग्रवाल, अम्बिका प्रसाद दिव्य, जगनिक, भूषण जइसन पुरोधा ई पावन माटी मा जनमें।

बुंदेली कइ लोकसाहित्य जतना भरपूर हवै वतनइ भरपूर वहिकइ साहित्य हवै। राष्ट्रभाषा हिन्दी का संवारे अउ संचारइ मा अवधी बुंदेली ब्रज कइ सबसे बड़ा जोगदान है, ई बात जगजाहिर हवै। ई बुंदेली विशेषांक मा बुंदेली कइ मूल्यवान थाती अउ साहित्य संजोवै कइ कोसिस कीन गइ जेहिके सिरजनहार हवैं डॉ. पुनीत बिसारिया भैया जे हमार साध पूरी किहिन।

सब पंचन का राम जोहारि

गमबहादुर मिसिर

बुन्देली साहित्य का वैशिष्ट्य

उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश में विस्तीर्ण बुन्देलखण्ड भूभाग भारत राष्ट्र का हृदय स्थल है। प्राचीन काल में चेदि और दशार्ण नामों से अभिहित यह भूखण्ड साहित्यिक समृद्धि के लिए चिरकाल से विख्यात रहा है और आधुनिक काल में वीरता की परम्परा ने इसमें मणिकांचन संयोग उपस्थित कर दिया है। यदि भूगर्भ विज्ञान की दृष्टि से देखें तो पाते हैं कि आज से 20 करोड़ वर्ष पहले भारत का कटि प्रदेश, जिसमें वर्तमान बुन्देलखण्ड शामिल था, में विश्व का प्राचीनतम भूभाग हुआ करता था। इसे और सरल भाषा में समझें तो आज से 50 करोड़ वर्ष पहले पृथ्वी पर केवल दो महाद्वीप हुआ करते थे,गोंडवाना लैंड और लॉरेशिया। गोंडवाना लैंड में भारत और ऑस्ट्रेलिया आपस में जुड़े हुए थे। 20 करोड़ वर्ष पहले इनके आपस में टकराने से धरती का पुनर्गठन हुआ, जिससे दक्षिणी गोलार्द्ध में भारत और ऑस्ट्रेलिया अलग-अलग हो गए और टेथिस नामक समुद्र पर हिमालय निर्मित हुआ। गोंडवाना लैंड और लॉरेशिया के हिस्सों से भारत निर्मित हुआ, किन्तु मध्य भारत का अंश गोंडवाना लैंड से निर्मित हुआ।

चूंकि यह प्राचीनतम भूमि थी, अतः यहाँ पर सभ्यता ने भी सर्वप्रथम अंगड़ाई ली और बुन्देलखण्ड अञ्चल में अगस्त्य, अपाला, मैत्रेयी, च्यवन, आदि कवि महर्षि वाल्मीकि, महर्षि वेद व्यास, भवभूति आदि ऋषियों-ऋषिकाओं ने यहाँ जन्म लेकर इसे अपनी सृजन भूमि बनाया। ऋग्वेद की अधिकांश ऋचाओं के दृष्टाओं ने यहीं वर्तमान बुन्देलखण्ड में जन्म लेकर वैदिक ज्ञान को अनुभूत किया।

कालांतर में भी वीरांगना लक्ष्मीबाई के अपरिमित शौर्य की विरासत को सहेजने वाले बुन्देलखण्ड प्रान्त में साहित्यिक समृद्धि की सुदीर्घ परम्परा जारी रही। विष्णुदास, ईसुरी, आचार्य केशवदास, गोस्वामी तुलसीदास, पद्माकर, खुमान कवि, ठाकुर, बोधा, नवल सिंह, पजनेस, प्रतापसाहि, छत्रसाल, गंगाधर व्यास, लाल कवि, गंग कवि, अक्षर अनन्य, राय प्रवीण, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, सियारामशरण गुप्त, मुंशी अजमेरी, माधवराव सप्रे, वृन्दावनलाल वर्मा, डॉ. रामकुमार वर्मा, अम्बिका प्रसाद 'दिव्य', केदारनाथ अग्रवाल प्रभृति रचनाकारों ने यहाँ आँखे खोलीं और अपने साहित्य की मधुर सुवास से जन-जन के अंतस्तल को झंकृत कर दिया। इस पावन धरा को अपनी रचना भूमि बनाने वाले मनीषियों में जनकवि जगनिक, भूषण, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, मुंशी प्रेमचन्द, पं. बनारसीदास चतुर्वेदी प्रभृति अग्रगण्य रहे हैं। इसकी सीमाओं के विषय में पन्ना नरेश छत्रसाल के समय से यह उक्ति प्रचलित हो गयी थी-

'इत जमुना उत नर्मदा, इत चम्बल उत टौंस।

छत्रसाल सों लरन की, रहू न काहू हौंस।।

उपर्युक्त सीमाएँ छत्रसाल के शासन काल की रही है, जिन पर अधिक मतभेद नहीं है, किन्तु कहा जाता है कि पश्चिमी सीमा के विषय में कुछ अन्य मत भी हैं। कनिंघम ने पश्चिमी बुन्देलखण्ड की सीमा बेतवा तक और दीवान मजबूत सिंह ने मालवा में काली सिन्ध तक माना है। इस प्रकार पूर्व में टौंस नदी और सोन या रीवा है, पश्चिमी में बेतवा, सिन्ध, चम्बल नदी, विन्ध्याचल पर्वत श्रेणी तथा मालवा, ग्वालियर और भोपाल आते हैं, उत्तर में यमुना-गंगा नदियाँ तथा इटावा, कानपुर, फतेहपुर, इलाहाबाद, मिर्जापुर एवं बनारस आते है एवं दक्षिण में नर्मदा नदी और मालवा हैं।

वर्तमान समय में प्रचलित बुन्देलखण्ड की सीमा उत्तर-प्रदेश तथा मध्य प्रदेशमें विभक्त है। उत्तर प्रदेश के अन्तर्गत झाँसी, जालौन, ललितपुर, महोबा, बाँदा, हमीरपुर, चित्रकूट तथा बाँदा जिले आते हैं, जबकि मध्य प्रदेशके अन्तर्गत ग्वालियर, सागर, दमोह, पन्ना, छतरपुर, जबलपुर, होशंगाबाद, विदिशा, टीकमगढ़, ओरछा, नरसिंहपुर, सिवनी, दतिया, दमोह आदि को रखा जा सकता है।

डॉ. श्याम सुन्दर दास अपनी पुस्तक 'भाषा विज्ञान' में बुन्देलखण्ड की भाषा तथा भौगोलिक स्थिति की चर्चा करते हुए लिखते हैं, "यह बुन्देलखण्ड की भाषा है और ब्रजभाषा के क्षेत्र के दक्षिण में बोली जाती है। शुद्ध रूप से यह झाँसी, जालौन, हमीरपुर, ग्वालियर, भोपाल, ओरछा, सागर, नरसिंहपुर, सिवनी तथा होशंगाबाद में बोली जाती है। इसके कई मिश्रित रूप दतिया, पन्ना, चरखारी, दमोह, बालाघाट तथा छिंदवाड़ा के कुछ भाग में पाए जाते हैं। मध्य काल में बुन्देलखण्ड में अच्छे कवि हुए हैं, पर उनकी भाषा ब्रज ही रही है। उनकी ब्रजभाषा पर कभी-कभी बुन्देली की अच्छी छाप दिखी पड़ती है।"

इस क्षेत्र की सबसे बड़ी समस्या यह रही है कि यहाँ के प्रायः सभी महत्त्वपूर्ण कवियों को ब्रज भाषा का कवि मानकर बुन्देली को उसके चिर प्रतीक्षित काव्य कोश के उत्तराधिकार से प्रायः वंचित रखा गया। डॉ. श्याम सुंदर दास जी की उपर्युक्त पंक्तियों में इसका लघुतम संकेत मिलता है।

इन महत्वपूर्ण विद्वानों के अतिरिक्त सर जार्ज ग्रियर्सन, पं. गोरेलाल तिवारी, दीवान प्रतिपाल सिंह, रायबहादुर डॉ. हीरालाल, डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, पं. केशवदास मिश्र, गौरीशंकर द्विवेदी, पं. बिहारी मिश्र, आनन्दीलाल खरे, डॉ. पूरनचन्द श्रीवास्तव, डॉ. अर्चना भार्गव, डॉ. उषा सक्सेना, डॉ. बहादुर सिंह परमार, डॉ. रामनारायण शर्मा, डॉ सरोज गुप्ता, डॉ छाया चौकसे प्रभृति विद्वत व्यक्तित्वों ने इस धरा के भौगोलिक एवं भाषाई महत्व पर प्रकाश डाला है।

बुन्देलखण्ड के इस विस्तृत भूभाग में पश्चिमी हिन्दी की बुन्देली बोली व्यवहृत की जाती है। बुन्देली काव्य की परम्परा पर यदि हम दृष्टि डालें तो पाते हैं कि विक्रम संवत् की बारहवीं शताब्दी से अद्यावधि मौखिक एवं लिखित परम्परा में बुन्देली काव्यधारा अप्रतिहत प्रवाहमान रही है। मौखिक परम्परा का सर्वाधिक लोक स्वीकृत एवं विख्यात महाकाव्य आल्हखण्ड है, जिसे बुन्देली भूभाग ही नहीं, वरन् अन्य स्थलों पर भी जनता ने अपने गले का हार बनाया है। वस्तुतः आल्हखण्ड बुन्देली काव्य परम्परा का सर्वोत्कृष्ट शिखर है।

जहाँ तक लिखित काव्य धारा का प्रश्न है तो यह प्रायः विक्रम की तेरहवीं शताब्दी से प्राप्त होने लगती है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि आल्हखण्ड के पश्चात मौखिक काव्य परम्परा प्रायः क्षीण हो गयी और गोस्वामी तुलसीदास एवं लोककवि ईसुरी के आगमन से पूर्व तक कोई बड़ा नाम लोककण्ठ में मौखिक काव्य परम्परा में सदा-सर्वदा के लिये स्थान बना पाने में प्रायः असफल रहा। परिणामस्वरूप लिखित काव्य की परम्परा ने अपनी जड़ें जमानी शुरू कर दीं। चौदहवीं शताब्दी में विष्णुदास की कृतियों ने समस्त भारतवर्ष विशेषकर मध्य एवं उत्तर भारत के जनजीवन के राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक परिवेश को निरूपित करने का महत् कार्य किया। वे बुन्देली तथा हिंदी के प्रारम्भिक राम काव्य 'रामायण कथा' तथा महाभारत आधारित काव्य 'महाभारत कथा' के प्रणेता रहे हैं। बुन्देली काव्य की धारा रीति काल में आकर शिखर पर जा पहुँचती है और 16वीं शताब्दी से लेकर 17वीं शताब्दी तक रीतिकालीन काव्य बुन्देलखण्ड के कवियों का कंचन स्पर्श पाकर मणिकंचन संयोग उपस्थित करता है। इस दौर में बलभद्र मिश्र, आचार्य केशवदास, राजा मधुकर शाह, छत्रसाल, हरिराम व्यास, गोविन्द स्वामी, तानसेन, महाराजा इन्द्रजीत सिंह, राय प्रवीण, मनसाराम सिद्ध, गंग कवि, बिहारीलाल, बालकृष्ण मिश्र, सुन्दरदास, शिवलाल मिश्र, प्रभृति कवियों ने राम तथा कृष्ण भक्ति की ऐसी काव्यधारा की सृष्टि की कि समस्त हिन्दी भूभाग इसमें रससिक्त हो उठा। इस दौरान महोबा, ग्वालियर, ओरछा, कालिंजर, कन्नौज, सिरसागढ़, बौरीगढ़, नैनागढ़, नरवरगढ़, पथरीगढ़ आदि स्थलों का वर्णन प्रमुखता से हुआ है तथा महोबा, ग्वालियर और ओरछा काव्य संरक्षण के प्रधान केन्द्र के रूप में हमारे सम्मुख आए।

सत्रहवीं शताब्दी से अठारहवीं शताब्दी तक की शती राष्ट्रीयता की उद्दाम भावना को समप्रित रही है। इस दौरान मुग़लों का बुन्देलखण्ड पर आक्रमण शुरू हो गया था तथा उन्होंने यहाँ की राजसत्ता एवं राजनीति को प्रभावित करना प्रारम्भ कर दिया था। मुगल बादशाह शाहजहाँ ने ओरछा और छतरपुर में क्रमशः जुझार सिंह और छत्रसाल पर नियंत्रण पाने के प्रयास तेज कर दिए थे और उन्हें अपना आधिपत्य स्वीकार करने के लिए मजबूर करने के उद्देश्य से साम-दाम-दण्ड-भेद ये सभी नीतियाँ अपनाकर उन पर दबाव डालना प्रारम्भ कर दिया था। इस दौरान भूषण जैसा विख्यात राष्ट्रीय काव्य धारा का कवि हमारे समक्ष आता है, जिसके

ओजपूर्ण काव्य सृजन ने राजनीति को प्रबोधन देने के साथ-साथ आम जनता को भी प्रभावित करने का कार्य किया। उनके अतिरिक्त लाल कवि ने भी वीरगाथा की काव्य परम्परा को नए आयाम दिए। इस दौरान भक्ति की एक समांतर धारा भी बह रही थी, जिसके अन्तर्गत सगुण भक्ति में महामति प्राणनाथ, निर्गुण भक्ति में अक्षर अनन्य, प्रेममार्गी काव्य परम्परा में हरिसेवक मिश्र, श्रृंगार काव्य में पृथ्वी सिंह रसनिधि, कृष्ण भक्ति की वात्सल्य युक्त काव्य धारा में बख्शी हंसराज सृजन कर रहे थे। अठारहवीं शताब्दी से 1950 विक्रमी तक का 150 वर्ष का समय श्रृंगारकाल का माना जाना चाहिये। इस काल के सर्वोकृष्ट कवि पद्माकर थे, जिन्होंने राजदरबार के जीवन और रहन-सहन के साथ-साथ लोक जीवन के रंग भी अपनी कविताओं में उकेरे हैं। इसी काल में खुमान कवि, ठाकुर, रूपसाहि, पजनेस, नवल सिंह कायस्थ, ईसुरी प्रभृति कवियों ने श्रृंगार के विविध पक्षों का निरूपण किया है। इसके पश्चात आधुनिक काल में बुन्देली काव्य धारा पारंपरिक एवं समसामयिक संदर्भों से संयुक्त होकर अनेक दिशीय मार्ग धरण करती है। आधुनिक काल के प्रमुख बुन्देली कवियों में मदनमोहन द्विवेदी, मदनेश, हरनाथ, डॉ. भवानी प्रसाद, ऐनानंद, सुखराम चौबे गुणाकर, पं. गौरीशंकर शर्मा, गौरीशंकर सुधा, मीर अमीर अली, पं. जानकीप्रसाद, शिवसहाय चतुर्वेदी, रामचन्द्र भार्गव, हरिप्रसाद हरि, गौरीशंकर द्विवेदी 'शंकर', लोकनाथ द्विवेदी 'सिलाकारी', द्वारकाप्रसाद मिश्र 'द्वारिकेश', पं. ज्वालाप्रसाद ज्योतिषी, पं. भैयालाल व्यास, श्री लक्ष्मीनारायण 'पथिक', माधव शुक्ला 'मनोज', डॉ. बलभद्र तिवारी, गुण सागर सत्यार्थी, महेश कुमार मिश्र 'मधुकर', महाकवि अवधेश, कैलाश मड़वैया, रघुवीर प्रसाद श्रीवास्तव जीजा बुंदेलखण्डी, दुर्गेश दीक्षित, माधव शुक्ल मनोज, मधुकर, हरगोविन्द पुष्प, रतिभानु तिवारी 'कंज', माधव शुक्ल 'मनोज', महेश कटारे सुगम, नवल किशोर सोनी 'मायूस', शंकरदयाल खरे, राघवेन्द्र उदैनिया, साकेतसुमन चतुर्वेदी, लखनलाल खरे, राना लिधौरी आदि प्रमुख हैं, जिनका विस्तृत विवरण प्रस्तुत है। बुन्देली गद्य के क्षेत्र में भी बुन्देली लेखकों की लेखनी प्रवहमान रही है, किन्तु काव्य की तुलना में इनका परिमाण अल्प है। फिर भी अंततः इतना अवश्य कहा जा सकता है कि बुन्देलखण्ड ने ही आदिकवि वाल्मीकि प्रणीत 'रामायण' दिया, महर्षि कृष्ण द्वैपायन विरचित 'जय' अर्थात 'महाभारत' ग्रंथ दिया, हिन्दी की पहली विष्णुदास कृत 'रामायण कथा' और 'महाभारत कथा' दी, जगनिक ने 'परमाल रासो' अर्थात 'आल्ह खंड' जैसा अप्रतिम ग्रंथ दिया, गोस्वामी तुलसीदास, आचार्य केशवदास, बिहारीलाल, पद्माकर, ईसुरी जैसे अनेक अमूल्य कवि दिए, हिन्दी की पहली कहानी 'एक टोकरी भर मिट्टी' माधव राव सप्रे जी ने दी, फलतः हिंदी साहित्य के कोष की अमूल्य श्रीवृद्धि संभव हुई।

अब अथ संपादक कथा की ओर आता हूँ। आदरणीय राम बहादुर मिसिर जी लोक भाषा विशेषकर मेरी जन्मभूमि अवध की लोक भाषा अवधी के मर्मज्ञ विद्वान हैं। वे विगत अनेक दशकों से अवधी के प्रचार-प्रसार हेतु निःस्वार्थ भाव से अहर्निश सेवा में संलग्न रहे हैं। 'अवध ज्योति' पत्रिका के माध्यम से उन्होंने वर्षों से अवधी साहित्य को साहित्य मंच पर प्रतिष्ठित करने में महती भूमिका का निर्वहन किया है। विगत कुछ वर्षों से उन्होंने हिंदी की लोक भाषाओं को परस्पर जोड़ने का अभिनव उद्यम प्रारंभ किया है, जिसके द्वारा वे विभिन्न लोकभाषाओं के सूत्रों को सफलतापूर्वक अंतर्ग्रथित कर रहे हैं। इस हेतु अवध ज्योति का बघेली विशेषांक प्रकाशित होने के बाद आदरणीय मिसिर जी ने बुन्देली विशेषांक का गुरुतर दायित्व मेरे कंधों पर सौंपा, जिसमें मैं कितना सफल हो सका हूँ, यह तय करने का दायित्व मैं सुधी पाठकों पर छोड़ता हूँ। आशा है, अवध ज्योति का बुन्देली विशेषांक बुन्देलखण्ड की अनूठी साहित्यिक विरासत को सबके समक्ष प्रस्तुत करने में सहायक होगा और अवध नरेश श्रीराम एवं ओरछाधीश राजा राम की कृपा हम सबके जीवन में आनंद भरेगी। जय राम जी की।

सोमवार, 22 जनवरी, 2024 प्रो. पुनीत बिसारिया
श्रीराम प्राण प्रतिष्ठा महापर्व